आर्यसमाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५—सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

—: ओ३म् :—

वैदिक-नित्यकर्म-विधिः

मूल मात्र

सन्ध्या, प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, दर्शपौर्णमासेष्टि और पितृ-यज्ञादि सम्पूर्ण दैनिक कर्त्तव्य, सामान्य-प्रकरण, दैनिक तथा बृहद् अग्निहोत्र सहित

[इस संस्करण तक ७५,००० छपीं]

प्रकाशक—
मन्त्री—रामलाल कपूर ट्रस्ट,
बहालगढ़, (सोनीपत-हरयाणा)

नवम संस्करण १०,००० मूल्य २.००

पृष्ठ ३-४२ तक कमाल प्रिंटिंग प्रेस, नई सड़क, दिल्ली में आफसेट से छपे।
रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस, बहालगढ़ (सोनीपत-हरयाणा)

ट्रस्ट के उद्देश्य

प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण, उसकी रक्षा तथा प्रचार एवं भारतीय संस्कृति, भारतीय शिक्षा, भारतीय विज्ञान और चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा।

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

प्रार्थना

असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

—: ओ३म् :—

वैदिक-नित्यकर्म-विधिः

स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, बृहद् हवन के मन्त्रों सहित

[मूल-मन्त्र]

प्रकाशक—

मन्त्री—रामलाल कपूर ट्रस्ट,
बहालगढ़, (सोनीपत-हरयाणा)

मुद्रक—

नरेन्द्रकुमार कपूर
रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस, बहालगढ़ (सोनीपत)

नवम संस्करण	भाद्रपद २०५०	मूल्य २.००
१०,०००	अगस्त १९९३	प्रचारार्थ

प्रकाशकीय

श्री माता प्रेमदेवीजी दरगन ने अपने स्वर्गीय पतिदेव श्री केशव चन्द्र जी दरगन की स्मृति में **'वैदिक-नित्यकर्म-विधि'** दैनिक कर्मों की विधि और मन्त्रों के अर्थ सहित प्रकाशित करने के लिए चार सहस्र रुपया रामलाल कपूर ट्रस्ट को दान में दिया था। तदनुसार ट्रस्ट ने ज्येष्ठ संवत् २०२८ (मई १९७१) में 'नित्य-कर्म-विधि' की ५००० प्रतियां छपवाई थीं।

ट्रस्ट अपने आरम्भ-काल से ही **सन्ध्योपासनविधिः** (अर्थ-सहित) तथा **हवन-मन्त्र** छाप रहा है। पाठकों की यह मांग रहती है कि सन्ध्या और हवन के सब मन्त्र एक साथ एक पुस्तक में ही उपलब्ध कराये जायें। अत: अब हम परीक्षण के तौर पर पूर्व प्रकाशित **वैदिक-नित्यकर्म-विधि** का यह **मूलमात्र** संस्करण प्रकाशित कर रहे हैं।

इस ग्रन्थ में दैनिक कर्मों की विधि और मन्त्रों के साथ **स्वस्ति-वाचन, शान्तिकरण, बृहद्हवन, दर्शेष्टि, पौर्णमासेष्टि** तथा **वैदिक-संगठन-सूक्त** के मन्त्र **दैनिक प्रार्थना** और कुछ भजन भी दे रहे हैं।

आशा है आर्य जनता हमारे इस प्रयत्न को उसी प्रकार अपनायेगी जैसे उसने पहले के ग्रन्थों को अपनाया है।

बहालगढ़
सोनीपत (हरियाणा)

मन्त्री—
रामलाल कपूर ट्रस्ट

दशम संस्करण

मूल वैदिक-नित्यकर्म-विधि के १, २ और ७ संस्करण ५-५ सहस्र तथा ३, ४, ५, ६, ८, ९ संस्करण १०-१० सहस्र की संख्या में छपे थे। इस बार भी हम बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखकर दश सहस्र छाप रहे हैं।

माघ सं० २०५२

विजयपाल विद्यावारिधि

✡ ओ३म् ✡

अथ वैदिक-नित्यकर्म-विधिः

इस पुस्तक में आर्यों के प्रतिदिन के नित्य कर्त्तव्य कर्मों का विधान है। वैदिक मन्तव्य के अनुसार प्रातःकाल से लेकर शयन-काल पर्यन्त जो-जो विशेष नैत्यिक कर्म करने होते हैं, वे निम्नलिखित हैं—

प्रातःकाल के कर्त्तव्य

१—शयन से उठकर ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना
२—शौच, दन्तधावन, व्यायाम
३—स्नान
४—सन्ध्योपासना
५—अग्निहोत्र
६—स्वाध्याय
७—पितृ-यज्ञ
८—बलिवैश्वदेव-यज्ञ
९—अतिथि-यज्ञ

सायंकाल के कर्त्तव्य

१—अग्निहोत्र
२—सन्ध्योपासना
३—पितृ-यज्ञ
४—बलिवैश्वदेव-यज्ञ
५—अतिथि-यज्ञ
६—शयन से पूर्व शिव संकल्प की प्रार्थना

इसके साथ ही इसे अधिक उपयोगी बनाने के लिए इस ग्रन्थ में आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में प्रयुक्त होनेवाले स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, और बृहद् हवन के मन्त्र भी दे रहे हैं। अमावस्या और

पूर्णिमा को करने योग्य पाक्षिक दर्शेष्टि और पौर्णमासेष्टि के मन्त्र तथा कुछ प्रार्थना और भजन भी दे रहे हैं।

इस पुस्तक में लिखे गये कर्मों के सब मन्त्रों का अर्थ हमारी बड़ी 'वैदिक-नित्यकर्म-विधि' में देखें। यहां केवल उक्त कर्मों के मन्त्र, और उनके करने की विधि ही लिखी है।

नित्यकर्मों का फल–इन नित्यकर्मों को यथाविधि करने से ज्ञान की प्राप्ति, आत्मा की उन्नति, और आरोग्यता होने से शरीर सुख, और व्यवहार और परमार्थ की सिद्धि होती है। इन से मनुष्य जीवन के धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि होती है।

जागरण-वेला में पठनीय मन्त्र

ओं प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान् प्रतिगृह्या नि धत्ते। तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः ॥१॥ ऋ० १।१२५।१॥

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥२॥

ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥३॥

ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥४॥

ओम् उतेदानीं भगवन्तःस्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥५॥

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥६॥

ऋ० म० ७। सू० ४१। मं०१-५॥

स्नान के समय पठनीय मन्त्र

ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन!
महे रणाय चक्षसे ॥१॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ॥२॥

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥३॥

ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्।
अपो याचामि भेषजम् ॥४॥ अथर्व का० १। सू० ५॥

शं न आपो धन्वन्याः शमु सन्त्वनूप्याः।
शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः॥ अथर्व का० १ सू० ६। मं० ४॥

अथ सन्ध्योपासन-विधिः

अब सन्ध्योपासना=ब्रह्मयज्ञ की विधि लिखि जाती है। 'सन्ध्या' शब्द का अर्थ यह है कि जिसमें भली-भांति परमेश्वर का ध्यान करते हैं, वा ध्यान किया जाये, वह 'सन्ध्या' कहाती है। सो रात और दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये।

पहिले बाह्य जलादि से शरीर की शुद्धि, और राग-द्वेष आदि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिये। क्योंकि मनु जी ने (अ० ५ के १०९ श्लोक में) लिखा है कि शरीर जल से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से, और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है। परन्तु शरीर-शुद्धि की अपेक्षा अन्तःकरण की शुद्धि सब को अवश्य करनी चाहिये। क्योंकि वही सर्वोत्तम और परमेश्वर-प्राप्ति का एक साधन है।

पहले कुशा वा हाथ से मार्जन करें, अर्थात् परमेश्वर का ध्यान आदि करने के समय किसी प्रकार का आलस्य न आवे, इसलिये शिर और नेत्र आदि पर जलप्रक्षेप करें। यदि आलस्य न हो तो न करना। फिर कम से कम तीन प्राणायाम करें। अर्थात् भीतर के वायु को बल से बाहर निकालकर यथाशक्ति बाहर ही रोक दें। फिर शनैःशनैः ग्रहण करके कुछ देर भीतर ही रोकके बाहर निकाल दें, और वहां भी कुछ देर रोकें। इस प्रकार कम से कम तीन बार करें। इससे आत्मा और मन की स्थिति सम्पादन करें। इसके अनन्तर आगे लिखे 'गायत्री-मन्त्र' से शिखा को बांधकर रक्षा करें।

अथ गायत्री-मन्त्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजुः अ० ३६। मं० ३॥

शिखा-बन्धन का प्रयोजन यह है कि केश इधर-उधर न गिरें। सो यदि केशादि-पतन न हो, तो न करें। और रक्षा करने का प्रयोजन यह है कि परमेश्वर प्रार्थित होकर सब भले कामों में सदा सब जगह में हमारी रक्षा करे।

अथ आचमन-मन्त्रः

निम्न मन्त्र को एक बार बोलकर जल से तीन आचमन करें—

ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥ यजुः अ० ३६। मं० १२॥

अथ इन्द्रियस्पर्श-मन्त्राः

निम्नलिखित मन्त्रों में बाईं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों से जल द्वारा इन्द्रियस्पर्श करें—

ओं वाक् वाक्। इससे मुख।
ओं प्राणः प्राणः। इससे नासिका (दाहिनी व बाईं)।
ओं चक्षुः चक्षुः। इससे दोनों नेत्र (दाहिना व बायां)।
ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। इससे दोनों कान (दाहिना व बायां)।
ओं नाभिः। इससे नाभि।
ओं हृदयम्। इससे हृदय।
ओं कण्ठः। इससे कण्ठ।

ओं शिरः इससे शिर।

ओं बाहुभ्यां यशोबलम्।

इससे दोनों भुजाएं (दाहिनी व बाईं)।

ओं करतलकरपृष्ठे ॥

इससे दोनों हथेली, तथा उनके ऊपरी भाग।

अथ मार्जन-मन्त्राः

इसी प्रकार निम्न मन्त्रों से अङ्गों पर जल के छींटे देवें—

ओं भूः पुनातु शिरसि। इससे शिर।

ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः।

इस से दोनों नेत्र (दाहिना व बायां)।

ओं स्वः पुनातु कण्ठे। इससे कण्ठ।

ओं महः पुनातु हृदये। इससे हृदय।

ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। इससे नाभि।

ओं तपः पुनातु पादयोः।

इससे दोनों पैर (दाहिना व बायां)।

ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। इससे पुनः शिर।

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र॥ इससे सब शरीर पर।

अथ प्राणायाम-मन्त्राः

निम्न मन्त्रों से कम से कम तीन प्राणायाम करें—

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः।
ओं तपः। ओं सत्यम्॥

अथ अघमर्षण-मन्त्राः

ओम् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥१॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥२॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥

ऋ० म० १०। सू० १९०। मं० १-३॥

अथ आचमन-मन्त्रः

निम्न मन्त्र को एक बार बोल कर तीन आचमन करें—

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः॥ यजुः अ० ३६। मं० १२॥

तदनन्तर गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थ विचारपूर्वक परमेश्वर की स्तुति अर्थात् परमेश्वर के गुण और उपकार का ध्यान कर पश्चात् प्रार्थना करें।

अथ मनसापरिक्रमा-मन्त्राः

निम्न मन्त्रों से ईश्वर की व्यापकता का विचार करें—

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नमः

एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नमं एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नमं एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नमं एभ्यो अस्तु । यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥ अथर्व० का० ३ । सू० २७ । मं० १-६ ॥

अथ उपस्थान-मन्त्राः

निम्न मन्त्रों से ईश्वर के तेजःस्वरूप का ध्यान करें—

ओम् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥
यजुः अ० ३५ । मं १४ ॥

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥ यजुः अ० ३३ । मं० ३१॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥ यजुः अ० ७ । मं० ४२ ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥
यजुः अ० ३६ । मं० २४ ॥

अथ गुरु-मन्त्रः

निम्न मन्त्र का जाप करें—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजुः अ० ३६। मं० ३॥

अथ समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

अथ नमस्कार-मन्त्रः

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
यजुः अ० १६। मं ४१॥

इति सन्ध्योपासनविधिः समाप्तः॥

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना-मन्त्राः

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रन्तन्नऽ आ सुव ॥१॥ यजुः अ० ३०। मं० ३॥

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। और जो कल्याणकारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइये॥१॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
यजुः अ० १३। मं० ४॥

जो स्वप्रकाशस्वरूप है, और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये है, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से भक्ति किया करें॥२॥

य ऽ आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽ उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
यजु० अ० २५। म० १३॥

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर आत्मा और समाज के बल का देनेवाला है, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं, और जिसके प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्षसुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखदायक सकल ज्ञान के देनेवाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से विशेष भक्ति करें, अर्थात् उसी की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहें ॥३॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

यजुः अ० २५ । मं० ११ ॥

जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपने अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें ॥४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

यजु० अ० ३२ । मं० ६ ॥

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण, और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त, अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता, और भ्रमण कराता है, हम लोग उस

सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ॥५॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

ऋ० मं० १० । सू० १२१ । मं० १० ॥

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! आप से भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता। अर्थात आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग आपका आश्रय लें, और वाञ्छा करें, वह-वह सब हमारी कामनायें सिद्ध हों। जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें ॥६॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽ अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

यजु० अ० ३२ । मं० १० ॥

हे मनुष्यों! वह परमात्मा हमारा भ्राता के समान सहायक, सकल जगत् का उत्पादक, सब कामों का पूर्ण करनेवाला, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम स्थान जन्मों को जानता है। जिस सांसारिक सुखदुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त, मोक्षस्वरूप, धारण करनेवाले परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होकर विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु आचार्य राजा और न्यायाधीश है। हम लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें ॥७॥

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ॥८॥

यजुः अ० ४० । मं० १६॥

हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे, सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त है, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये, और हम से कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिये । इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें, और सर्वदा आनन्द में रहें ।।८।।

—:o:—

अथ स्वस्तिवाचनम्

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।।१।।
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ।।२।।

ऋ० म० १ । सू० १ । मं० १, ६ ।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ।।३।।
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।।४।।
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।।५।।
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।।६।।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।।७।।

ऋ० म० ५ । सू० ५१ । मं० ११-१५ ।।

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।८।।

ऋ० म० ७ । सू० ३५ । मं० १५ ।।

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ।।९।।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।।१०।।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।।११

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।।१२।।

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ।।१३

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।।१४।।

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥

ऋ० मं० १० । सू० ६३ । मं० ३-१६ ॥

इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽ ईशत माघशंसो ध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥

यजु० अ० १ । मं० १ ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतासऽउद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥२४॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳬं रातिरभि नो निवर्तताम् ।
देवानाᳬं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥

स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥

यजु० अ० २५ । मं० १४, १५, १८, १९, २१ ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
१र २र ३ १ २
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥

१२ ३२३ २ ३ २१ ३

त्वमग्ने यज्ञानाᳬं होता विश्वेषाᳬं हितः ।

३२३१२३१२

देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥

साम० पूर्वा० प्रपा० १ । द० १ । मं० १,२ ॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥

अथर्व० कां० १ । सू० १ । मं० १ ॥

इति स्वस्तिवाचनम् ॥

—ः०ः—

अथ शान्तिकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुक्रुतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥४॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्व१ः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥९॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥
ऋ० म० ७ । सू० ३५ । म०१-१३ ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नोऽ अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥१४॥

शन्नो वातः पवताꣳ शन्नस्तपतु सूर्य्यः ।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽ अभि वर्षतु ॥१५॥

अहानि शं भवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शं नऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शं नऽ इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥१६

शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥१७॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥१८

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥
यजुः अ० ३६ । मं० ८,१०-१२,१७,२४ ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । २०॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२१॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मान्नऽ ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२२

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२४॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥

यजुः अ० ३४ । मं० १-६ ॥

१ २ ३ २उ ३ १र २र ३ १र २र
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
१ २ ३ १ २
शं ꣡ राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥ साम०उत्तरा० प्रपा० १। मं० ३॥

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥२७॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥२८॥

अथर्व० कां० १६ । सू० १५ । मं० ५-६॥

इति शान्तिकरणम्

यज्ञ-प्रकरण

आचमन-मन्त्र

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ इससे एक ।
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥ इससे दूसरा ।
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

तैत्तिरीय आरण्यक प्र० १०। अनु० ३२,३५ ॥

इससे तीसरा आचमन करके, तत्पश्चात् जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से अङ्गों का स्पर्श करें—

अङ्गस्पर्श-मन्त्र

ओं वाङ् म आस्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख ।
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों ।
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आंखें ।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान ।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों भुजाएं ।
ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों जंघाएं ।
ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥

पारस्कर गृ० का० २ । कण्डिका ३ । सू० २५ ॥

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना । तत्पश्चात् समिधा-चयन वेदि में करें । पुनः—

अग्न्याधान-मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः ॥ गोभिल गृ० प्र० १ । ख० १ । सू० ११ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि ला, अथवा घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर, उसमें छोटी-छोटी लकड़ी लगाके यजमान या पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों से उठा, यदि गम हो तो चिमटे से पकड़कर अगले मन्त्र से आधान करे। वह मन्त्र यह है—

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥
यजुः अ० ३। मं० ५॥

इस मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर, उसमें छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अगला मन्त्र पढ़के व्यजन से अग्नि को प्रदीप्त करे—

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥
यजुः अ० १५। मं० ५४॥

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे, तब चन्दन की अथवा पलाशादि की तीन लकड़ी आठ-आठ अंगुल की घृत में डुबो उनमें से नीचे लिखे एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में चढ़ावें। मन्त्र ये हैं—

समिदाधान के मन्त्र

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम॥१॥ इससे एक।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा॥ इदमग्नये—इदं न मम॥२॥ इससे, और—

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम॥३॥

इस मन्त्र से अर्थात् इन दोनों से दूसरी।

ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे—इदं न मम॥४॥
यजुः अ० ३। मं० १-३॥

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

इन मन्त्रों से समिदाधान करके नीचे लिखे मन्त्र से पांच घृत की आहुति देनी—

घृताहुति-मन्त्र

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम॥

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके वेदि के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावे। इसके ये मन्त्र हैं—

जलप्रसेचन के मन्त्र

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व॥१॥ इस मन्त्र से पूर्व।
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥२॥ इस से पश्चिम।
ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥३॥ इससे उत्तर। और—
गो० गृ० प्र० १। ख० ३। सू० १-३॥

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥४
यजु० अ० ३०। म १॥

इस मन्त्र से वेदि के चारों ओर जल छिड़कावे। इसके पश्चात् यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में जो एक आहुति, और यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में जो दूसरी आहुति देनी होती है, उसको "आघारावाज्याहुति" कहते हैं। और कुण्ड के मध्य में जो आहुतियां दी जाती हैं, उनको "आज्यभागाहुति" कहते हैं। सो घृतपात्र में से स्रुवा को भर अंगूठा मध्यमा और अनामिका से स्रुवा पकड़के—

आघारावाज्याहुति-मन्त्र

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥१॥

इस मन्त्र से वेदि के उत्तर भाग में।

ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय—इदं न मम ॥२॥

गो० गृ० प्र० १। ख० ८। सू० २४॥

इस मन्त्र से वेदि के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी। तत्पश्चात्—

आज्यभागाहुति-मन्त्र

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम ॥३॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय—इदं न मम ॥४॥

इन मन्त्रों से वेदि के मध्य में दो आहुति देनी। उसके पश्चात् उसी घृतपात्र में से स्रुवा को भरके प्रज्वलित समिधाओं पर व्याहृति की चार आहुति देवें—

[संस्कारों तथा विशेष यज्ञों के मन्त्र]

व्याहृति-आहुति मन्त्र

ओं भूरग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥१॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे—इदं न मम ॥२॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय—इदं न मम ॥३॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्नि-वाय्वादित्येभ्यः—इदं न मम ॥ ४ ॥

ये चार घी की आहुति देकर स्विष्टकृत् होमाहुति एक ही दें। यह घृत अथवा भात की देनी चाहिये। इसका मन्त्र—

स्विष्टकृदाहुति-मन्त्र

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्ट-कृते—इदं न मम ॥

इससे एक आहुति करके प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोलकर देनी चाहिये—

प्राजापत्याहुति-मन्त्र

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम ॥

इससे मौन करके एक आहुति देकर, चार आज्याहुति घृत की देवें—

आज्याहुति-मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ॥१॥
ओं भूर्भुव स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ॥२॥
ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा ॥ इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ॥३॥

ऋ० म० ९। सू० ६६। मं० १९-२१ ॥

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥४॥

ऋ० म० १० । सू० १२१ । मं० १० ॥

इनसे घृत की चार आहुति करके, 'अष्टाज्याहुति' के निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वत्र मङ्गलकार्यों में ८ (आठ) आहुति देवें । वे आठ आहुतिमन्त्र ये हैं—

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्—इदन्न मम ॥१॥

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्—इदन्न मम ॥२॥ ऋ० म० ४ । सू० १ । मं ४,५॥

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा ॥ इदं वरुणाय—इदन्न मम ॥३॥

ऋ० म० १ । सू० २५ । मं १९ ॥

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय—इदन्न मम ॥४॥ ऋ० मं० १ । सू० २४ । मं० ११॥

ओं येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्यः—इदन्न मम ॥५॥

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे—इदन्न मम ॥६॥ कात्य० २५।१।११॥

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च—इदं न मम ॥७॥

ऋ० मं० १ । सू० २४ । मं० १५ ॥

ओं भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा ॥ इदं जातवेदोभ्याम्—इदं न मम ॥८॥ यजुः अ० ५ । मं० ३ ॥

दैनिक-अग्निहोत्र के मन्त्र

प्रातःकाल की आहुति के मन्त्र

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥ यजुः अ० ३ । मं० १० ॥

सायंकाल की आहुति के मन्त्र

अब नीचे लिखे हुए मन्त्र सायंकाल में अग्निहोत्र के जानो—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥

इस तीसरे मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी चाहिये।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।
जुषाणोऽ अग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥ यजुः अ० ३ । मं० ९, १० ॥

दोनों काल के मन्त्र

अब निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः सायं आहुति देनी चाहिये—

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥ इदमग्नये प्राणाय, इदं न मम॥१॥

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा॥इदं वायवेऽपानाय,इदं न मम ॥२॥

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा॥इदमादित्याय व्यानाय,इदं न मम॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा॥
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदं न मम ॥४॥

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥५॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य
मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥ यजुः अ० ३२। मं० १४॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रन्तन्नऽ आ सुव स्वाहा ॥७॥ यजुः अ० ३० । मं० ३॥

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥
यजुः अ० ४० । मं० १६॥

इन आठ मन्त्रों से एक-एक मन्त्र करके एक-एक आहुति देवे। ऐसे आठ आहुति, देवें।

ओं सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा ॥

इस मन्त्र से तीन पूर्णाहुति, अर्थात् एक-एक बार पढ़के एक-एक करके तीन आहुति देवें ॥

इत्यग्निहोत्रविधिः संक्षेपतः समाप्तः ॥

अथ पक्षेष्टि

अमावस्या के दिन सामान्य यज्ञ के पश्चात् पूर्णाहुति (सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा)से पूर्व निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक(भात, खिचड़ी, लड्डू, मोहनभोग) से विशेष आहुतियां देवें—

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥

ओम् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥ इदमिन्द्राग्नीभ्यां—इदं न मम ॥

ओं विष्णवे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे—इदं न मम ॥

व्याहृति-आहुतियां (केवल घृत से)

ओं भूरग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥१॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे—इदं न मम ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय-इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्नि-वाय्वादित्येभ्यः—इदन्न मम ॥

पौर्णमासेष्टि (पौर्णमास-यज्ञ)

उपर्युक्त मन्त्रों से आहुतियां देने के पश्चात् 'ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' से पूर्णाहुति देवें।

पूर्णिमा के दिन सामान्य यज्ञ के पश्चात् पूर्णाहुति ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' से पूर्व निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक (भात, खिचड़ी, लड्डू, मोहनभोग) से विशेष आहुतियां देवें—

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥

ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा॥इदमग्नीषोमाभ्याम्—इदं न मम ॥

ओं विष्णवे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे—इदं न मम ॥

व्याहृति-आहुतियां. (केवल घृत से)

ओं भूरग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये इदन्न मम ॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे—इदन्न मम ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय—इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्नि-वाय्वादित्येभ्यः—इदन्न मम ॥

इस विधि के पश्चात् 'ओं सर्वं पूर्णं स्वाहा' से पूर्णाहुति देवें ॥

अथ पितृ-यज्ञः

पितरों के अन्तर्गत माता-पिता आदि वयोवृद्ध संबन्धियों के अतिरिक्त उन विशिष्ट विद्वानों का भी समावेश होता है,जिन के एक स्थान पर निवास[1] करने से गृहस्थ को धर्म अर्थ काम मोक्ष की शिक्षा मिलती रहती है। ऐसे मनुष्यों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना 'श्राद्ध', तथा भोजन वस्त्र से उन्हें तृप्त करना 'तर्पण' कहलाता है। इन ही दो कार्यों से पितृयज्ञ पूर्ण होता है, कोई विशेष आहुतियां इसकी नहीं हैं ॥

अथ बलिवैश्वदेव-यज्ञः

पाकशाला में बने खट्टे तथा नमकीन भोजन को छोड़कर, शेष पक्वान्न से चूल्हे की अग्नि में निम्न १० मन्त्रों से आहुतियां देवें—

ओम् अग्नये स्वाहा ॥१॥

ओं सोमाय स्वाहा ॥२॥

ओम् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ॥३॥

ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥

---

१. सर्वत्र विचरणशील विद्वान्, संन्यासी, उपदेशक जो अचानक घर पर पधारते हैं, वे 'अतिथि' कहाते है। उनके सत्कार के लिये अतिथि-यज्ञ पृथक् पृष्ठ ३६ पर कहा है।

ओं धन्वन्तरये स्वाहा ॥५॥

ओं कुह्वै स्वाहा ॥६॥

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥७॥

ओम् अनुमत्यै स्वाहा ॥८॥

ओं सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥९॥

ओं स्विष्टकृते स्वाहा ॥१०॥

अथ अतिथि-यज्ञः

जो विद्वान् उपदेशक संन्यासी आदि मानव-जाति के सेवार्थ भ्रमण करते हुए अचानक गृहस्थ के द्वार पर आ जाते हैं, वे 'अतिथि' कहलाते हैं। ऐसे महापुरुषों को सेवा-शुश्रूषा, अन्नपान आदि से सत्कार करना अतिथि-यज्ञ कहलाता है।

भोजन आरम्भ करने से पूर्व बोलने का मन्त्र

ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

यजुः अ० ११ । मं० ८३ ।

सोते समय बोलने के मन्त्र

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥३॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥४॥

यस्मिन्नृचः साम यजूंꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥५॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥६॥

यजुः अ० ३४। मं० १-६॥

संगठन–सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन-वृष्टि को ॥

ओं सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥२॥

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम, कर्त्तव्य के मानी बनो ॥

ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥

हों विचार समान सब के, चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूं बराबर, भोग्य पा सब नेक हों ॥

ओं समानी व आकूती समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति ॥४॥

हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से, जिससे बढ़े सुख सम्पदा ॥

वैदिक-राष्ट्रिय-प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

यजुः अ० २२ । मं० २२ ॥

राष्ट्रिय-प्रार्थना

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी ॥

होवें दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥

बलवान् सभ्य योद्धा, यजमानपुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ॥

फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

शान्तिपाठः

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-
रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

यजुः ३६।१७॥

भजन १

यज्ञरूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिये ॥१॥
वेद की बोलें ऋचाएं, सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें ॥२॥
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर-उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ॥३॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि सब करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ॥४॥
भावना मिट जाये मन, से पाप-अत्याचार की ।
कामनायें पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नार की ॥५॥
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिये ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ॥६॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ' विस्तार हो ।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ॥७॥
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वन्दना हम कर रहे ।
'नाथ' करुणारूप ! करुणा आपकी सब पर रहे ॥८॥

भजन २

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो ॥१॥
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो ।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ॥२॥
भूलि हैं हम ही तुम को तुम तो, हमरी सुधि नाहिं विसारे हो ।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो ॥३॥
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझे विरले बुधिवारे हो ।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो ॥४॥
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो ।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो ॥५॥

भजन ३

प्रणाम ईश तुमको, तेरी यह महिमा सारी ।
हर जीव में विराजे, ज्योति प्रभु तुम्हारी ॥१॥
सूरज ये चांद तारे, चमकें तेरे सहारे ।
सब काम को संवारे, उन पै कृपा तुम्हारी ॥२॥
योगी ऋषि मुनि जन, फल फूल वन के खाकर ।
तेरी ही धुन लगावें, उन पै कृपा तुम्हारी ॥३॥
मन्दिर ये मस्जिदें और, गिरजे वा गुरुदारे ।
तेरे नाम के नजारे, सब तू ही तू पुकारी ॥४॥
प्रभु तेरा नाम लेकर, कर बांध विनति करते ।
भक्ति का दान दीजे, उसके हैं हम भिखारी ॥५॥

भजन ४

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिस का यश नित गाते हैं, गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ॥१॥
मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ, बार मुनिवर धन्यवाद ॥२॥
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वरभर धन्यवाद ॥३॥
कूप में तालाब में, सिन्धु की गहरी धार में।
प्रेम-रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद ॥४॥
शादियों में कीर्त्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिये, करें नारी-नर सब धन्यवाद ॥५॥
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर-स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद ॥६॥

भजन ५

जय जय पिता परम आनन्ददाता।
जगदादिकारण मुक्तिप्रदाता ॥१॥
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे,
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्त्ता संहर्त्ता ॥२॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना,
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता ॥३॥
मैं लालित व पालित हूं पितृस्नेह का,
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझ से ताता ॥४॥

करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को,
करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः ॥५॥
मिटाओ मेरे भय आवागमन के,
फिरूं न जन्म पाता और बिलबिलाता ॥६॥
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु,
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता ॥८॥
"अमी" रस पिलाओ कृपा करके मुझको,
रहूं सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता ॥८॥

आरती (६)

ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे। ओं० ॥१॥
जो ध्यावे सो फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। ओं० ॥२॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी। ओं० ॥३॥
तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी। ओं० ॥४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता। ओं० ॥५॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति। ओं० ॥६॥
दीनबन्धु दुःख-हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे। ओं० ॥७॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा। ओं० ॥८॥

रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा

[प्रकाशित वा प्रसारित कुछ प्रामाणिक ग्रन्थ]

१. ऋग्वेदभाष्य—(संस्कृत, हिन्दी; ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित) प्रति भाग सहस्राधिक टिप्पणियां, १०-११ प्रकार के परिशिष्ट व सूचियां। प्रथम भाग ६०.००; द्वितीय भाग ४०.००; तृतीय भाग ५०.००।

२. यजुर्वेदभाष्य-विवरण—ऋषि दयानन्दकृत भाष्य पर पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत विवरण। प्रथम भाग १५०.००, द्वितीय भाग ७५.००।

३. तैत्तिरीय-संहिता—मूलमात्र, मन्त्र सूची सहित। १००.००

४. तैत्तिरीयसंहिता-पदपाठः—५० वर्ष से दुर्लभ ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन, बढ़िया सुन्दर जिल्द १५०.००।

५. अथर्ववेदभाष्य—श्री पं० विश्वनाथजी वेदोपाध्यायकृत। १-३ काण्ड ५०.००; ४-५ काण्ड ५०.००, ६ काण्ड ५०.००, ७-८ काण्ड ५०.००, ९-१० काण्ड ५०.००, ११-१३ काण्ड ५०.००, १४-१७ काण्ड ५०.००, १८-१९ काण्ड ५०.००, बीसवां काण्ड ५०.००।

६. ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका—पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित एवं शतशः टिप्पणियों से युक्त। सजिल्द ५०.००।

७. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-परिशिष्ट—भूमिका पर किये गये आक्षेपों के ग्रन्थकार द्वारा दिये गए उत्तर। ५.००

८. भूमिका-भास्कर—स्वामी विद्यानन्द। दोनों भाग ३००.००

९. माध्यन्दिन(यजुर्वेद)पदपाठ—शुद्ध संस्करण। १००.००

१०. गोपथब्राह्मण(मूल)—सम्पादक श्री डा० विजयपालजी विद्यावारिधि। सबसे अधिक शुद्ध और सुन्दर संस्करण। ८०.००

११. वैदिक-सिद्धान्त-मीमांसा—पं० युधिष्ठिर मीमांसक लिखित वेद-वेदाङ्गादि विषयक निबन्धों का संग्रह। प्रथम भाग ७५.००, द्वितीय भाग १००.००।

१२. कात्यायनीय ऋक्सर्वानुक्रमणी—(ऋग्वेदीया) षड्गुरुशिष्य विरचित संस्कृत टीका सहित। टीका का पूरा पाठ प्रथम बार छापा गया है। विस्तृत भूमिका और अनेक परिशिष्टों से युक्त। १५०.००

१३. ऋग्वेदानुक्रमणी—वेङ्कटमाधवकृत। इस ग्रन्थ में स्वर छन्द आदि आठ वैदिक विषयों पर गम्भीर विचार किया है। व्याख्याकार—डा० विजयपालजी विद्यावारिधि। ५०.००

१४. वैदिक-साहित्य-सौदामिनी—स्व० श्री पं० वागीश्वर वेदालङ्कार। काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण आदि के समान वैदिक साहित्य पर शास्त्रीय विवेचनात्मक ग्रन्थ। सजिल्द ७०.००

१५. ऋग्वेद की ऋक्संख्या—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। ५.००

१६. वेद-श्रुति-आम्नाय-संज्ञा-मीमांसा—युधिष्ठिर मीमांसक ३.००

१७. वैदिक छन्दोमीमांसा—यु० मी०। नया संस्करण ५०.००

१८. वैदिक स्वर-मीमांसा—यु० मी०। „ „ ५०.००

१९. उरु-ज्योति—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल लिखित वेदविषयक स्वाध्याय योग्य निबन्धों का संग्रह। सुन्दर छपाई। पक्की जिल्द २५.००

२०. वैदिक-जीवन—श्री विश्वनाथजी विद्यामार्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर वैदिक जीवन के सम्बन्ध में लिखा गया अत्यन्त उपयोगी स्वाध्याय योग्य ग्रन्थ। अजिल्द ३०.००, सजिल्द ४०.००

२१. वैदिक गृहस्थाश्रम—पूर्व लेखक द्वारा अथर्ववेद के आधार पर लिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। सजिल्द ५०.००

२२. पुरुषार्थ-प्रकाश—लेखक—श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी और ब्र० नित्यानन्दजी महाराज। ब्रह्मचर्य और गृहस्थधर्म सम्बन्धी ५० वर्षों से अप्राप्त पुस्तक। ४०.००

२३. यजुर्वेद का स्वाध्याय तथा पशुयज्ञ समीक्षा—लेखक—पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय। २०.००

२४. शतपथब्राह्मणस्थ अग्निचयन-समीक्षा—लेखक पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय। सजिल्द ६०.००

२५. ऋग्वेद-परिचय—श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड। ऋग्वेद का परिचयात्मक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। अजिल्द २०.००; सजिल्द २५.००।

२६. वैदिक-पीयूष-धारा—लेखक—श्री देवेन्द्रकुमार कपूर। चुने हुए ५० मन्त्रों की प्रतिमन्त्र पदार्थ पूर्वक विस्तृत व्याख्या, अन्त में भावपूर्ण गीतों से युक्त। उत्तम जिल्द १५.००; साधारण १०.००।

२७. क्या वेद में आर्यों और आदिवासियों के युद्धों का वर्णन है? लेखक—श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री। १२.००

२८. वेदों की प्रामाणिकता—डा० श्रीनिवास शास्त्री। ४.००

२९. Anthology of Vedic Hymns—स्वा० भूमानन्द सरस्वती। १००.००

३०. Success Motivating Vedic Lores—श्री देवेन्द्र कुमार कपूर। ५०.००

३१. बौधायन-श्रौत-सूत्रम्—(दर्शपूर्णमास) भवस्वामी और सायणाचार्य की व्याख्या सहित। मूल्य ६०.००।

३२. बौधायन-श्रौत-सूत्रम्—(आधान-प्रकरण)—सुबोधिनीवृत्ति और आधानप्रक्रियासहित (संस्कृत)। ६०.००

३३. दर्शपूर्णमास-पद्धति—पं० भीमसेन कृत, भाषार्थ सहित ३०.००

३४. कात्यायन-गृह्यसूत्रम्—(मूलमात्र) अनेक हस्तलेखों के आधार पर हमने इसे प्रथम बार छापा है। २५.००

३५. श्रौतपदार्थ-निर्वचनम्—(संस्कृत) अग्न्याधान से अग्निष्टोम पर्यन्त आध्वर्यव पदार्थों का विवरणात्मक ग्रन्थ। सजिल्द ५०.००

३६. श्रौत-यज्ञ-मीमांसा—(संस्कृत तथा हिन्दी)। लेखक—पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक। इसमें श्रौतयज्ञों की उत्पत्ति, प्रयोजन, उनमें परिवर्तन तथा पशुयज्ञों पर विस्तार से विवेचना की है ४०.००

३७. संस्कार-विधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती। अजिल्द १२.००, सजिल्द १६.००।

३८. वेदोक्त-संस्कार-प्रकाश—पं० बालाजी विट्ठल गांवस्कर द्वारा मूल मराठी में लिखे गये ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। २५.००

संस्कार भास्कर—संस्कारविधि की स्वामी विद्यानन्द सरस्वती कृत व्याख्या। १५०.००

संस्कार-विधि-मण्डनम्—संस्कारविधि की व्याख्या। लेखक—वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री। १२.००

अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय—इस में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, सुपर्णचिति सहित सोमयाग, चातुर्मास्य, वाजपेय आदि यागों का वर्णन है। (दोनों भाग एकत्र)। लेखक—युधिष्ठिर मीमांसक, डा० विजयपाल। २०.००

वैदिक नित्यकर्म-विधि—सन्ध्यादि पांचों महायज्ञ तथा बृहद् हवन के मन्त्रों को पदार्थ भावार्थ व्याख्या सहित। पं० युधिष्ठिर मीमांसक। १२.००।

वैदिक-नित्यकर्म-विधि—(मूलमात्र)—सन्ध्या तथा स्वस्तिवाचन आदि बृहद् हवन के मन्त्रों सहित। २.५०

पञ्चमहायज्ञविधि—ऋषि दयानन्दकृत संस्कृत और हिन्दी भाष्य सहित। शुद्ध संस्करण। ८.००

वैदिक-यज्ञों का स्वरूप—लेखक—डा० कृष्णलाल १०.००

सन्ध्योपासन-अग्निहोत्र-विधि—अंग्रेजी-हिन्दी। डा० विजयपाल विद्यावारिधि। १५.००

निरुक्त-श्लोकवार्त्तिकम्—केरलदेशीय नीलकण्ठ गार्ग्य विरचित एक मात्र मलयालम लिपि में ताडपत्र पर लिखित दुर्लभ प्रति के आधार पर मुद्रित। आरम्भ में उपोद्घात रूप में निरुक्त-शास्त्रविषयक संक्षिप्त ऐतिह्य दिया गया है। (संस्कृत)सम्पादक—डा० विजयपाल विद्यावारिधि। उत्तम कागज, शुद्ध छपाई तथा सुन्दर जिल्द सहित। १५०.००

पुस्तक प्राप्ति-स्थान—

रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत-हरियाणा) १३१०२१

रामलाल कपूर एण्ड संस २५६६, नई सड़क, देहली

आर्यसमाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५—सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

—: ओ३म् :—

वैदिक-नित्यकर्म-विधिः

मूल मात्र

सन्ध्या, प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, दर्शपौर्ण-मासेष्टि और पितृ-यज्ञादि सम्पूर्ण दैनिक कर्त्तव्य, सामान्य-प्रकरण, दैनिक तथा बृहद् अग्निहोत्र सहित

[इस संस्करण तक ८५,००० छपीं]

प्रकाशक —

मन्त्री—रामलाल कपूर ट्रस्ट,
बहालगढ़, (सोनीपत-हरयाणा)

दशम संस्करण १०,००० मूल्य २.५०

पृष्ठ ३-४२ तक कमाल प्रिंटिंग प्रेस, नई सड़क, दिल्ली में आफसेट से छपे।
रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस, बहालगढ़ (सोनीपत-हरियाणा)